INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 2, February 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

# 'दौड़' : बाजार, पूंजी और उपभोक्ता संस्कृति का अध्ययन

शोधार्थी - प्रतिभा दत्तात्रय अडगटला - मोहिते
अंभगवस्ती, वारुळवाडी, नारायणगाव
तहसील-जुन्नर, जिला - पुणे, महाराष्ट्र -410504
शोध निर्देशक – डॉ. सजित जगन्नाथ खांडेकर

**शोध आलेख का सारांश** –

"दौड़" ममता कालिया का लघु उपन्यास है। यह उपन्यास कथ्य की दृष्टि से उनके अन्य उपन्यासों में से भिन्न है। इसमें लेखिका ने आज की युवा पीढ़ी का चित्रण किया है। वर्तमान युग में मनुष्य इतना अर्थ केंद्रित हो गया है कि अपने रिश्तेदारों तक को वो भूलने लगा है। इस उपन्यास के ऐसे दो पुरुष पात्र है जो धन कमाने के एक मात्र उद्देश से अपने माता-पिता को अकेले छोड़कर दूर (विदेश) चले जाते हैं। साथ ही इसमें अवकाश प्राप्त पिता की भावनाओं को दर्शाया है। बेटे द्वारा पिता की जीवन भर की कमाई, जमा पूंजी का हिसाब किताब पूछा जाता है। इसमें लेखिका ने आज की मानसिक रुप से बदली हुई पीढ़ी के विचारों को बहुत ही गहराई से प्रस्तुत किया है।

**बीज शब्द** -

ममता कालिया- 'दौड़' उपन्यास- भूमंडलीकरण - बाजार - विज्ञापनबाजी-

पूंजी (आर्थिक, मानव कौशल) उपभोक्ता, संस्कृति का चित्रण

**प्रस्तावना** –

साहित्यकार किसी भी रचना का शीर्षक केंद्रीय पात्र के नाम पर या कथावस्तु के आधार पर अथवा प्रतीकात्मक रूप में देता है। प्रस्तुत उपन्यास 'दौड़' प्रतीकात्मकता की श्रेणी में आता है। दौड़ हमेशा कुछ पाने के लिए लगाई जाती है। जो सबसे पहले पहुंचता है उसे कुछ ना कुछ मिल ही जाता है। चाहे वह प्रतियोगिता हो या जिंदगी की दौड़ परंतु आज के जमाने में भूमंडलीकरण और उपभोक्तावाद के कारण हर एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से आगे दौड़ना चाहता है। दौड़ की प्रतियोगिता में एक सीमा होती है परंतु तरक्की या उन्नति की इच्छा रखने वाले दौड़ की कोई अंतिम सीमा नहीं होती। दौड़ते - दौड़ते दम निकल जाएगा लेकिन कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। पवन, सघन, स्टेला आदि नई पीढ़ी के पात्र अपने करियर की दौड़ में ऐसे ही दौड़ रहे हैं इस दौड़ में नैतिक मूल्यों को कोई महत्व नहीं देता इसमें साधन महत्वपूर्ण नहीं है, साध्य महत्वपूर्ण है। इस साध्य को हासिल करने के लिए उपन्यास के पात्र कुछ भी करने के लिए तैयार है। अपना गांव परिवार इतना ही नहीं तो अपने माता-पिता को भी छोड़ने के लिए तैयार है।

इक्कीसवीं सदी में भूमंडलीकरण के कारण युवा वर्ग के सामने बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने रोजगार के नए अवसर प्रदान किये। जिससे बाजार और उपभोक्ता का जन्म हुआ। बाजारवाद में विज्ञापन को बड़ा महत्व प्राप्त हुआ है। इस उपन्यास में विज्ञापन अतिशयोक्ति पूर्ण होते हुए भी लोगों पर उसके होने वाले प्रभाव को दर्शाया गया है। अभिषेक और राजुल जो पति- पत्नी है दोनों के संवाद के माध्यम से विज्ञापन की जानकारियां और यथार्थ को दिखाने का प्रयास किया गया है। अभिषेक ने टूथपेस्ट का विज्ञापन बनाया है, जिसे राजुल को वह दिखा रहा है। विज्ञापन के संदर्भ में राजुल कहती है, " नहीं मैं सोच रही थी, विज्ञापन कितनी अतिशयोक्ति करते हैं। सच्चाई यह है कि न किसी के हसने से फूल झरते हैं न मोती, फिर भी मुहावरा है कि लिक पीट रहा है।" **1** हम भी विज्ञापन को देखते हैं तो हमें नजर आता है कि विज्ञापन देने वाली नायिका के मुंह खोलते ही उसके दांतों से फूल झरने लगते हैं। इसमें कितनी सच्चाई है यह हम जानते हैं फिर भी उसकी तरफ आकर्षित होकर हम वह चीज खरीदते हैं विज्ञापन की चकाचौंध के कारण उपभोक्ता उसका कायल बन जाता है लेकिन राजुल विज्ञापन की सच्चाई और नैतिकता की बात करती है तो अभिषेक कहता है कि "ओ शीट ! सीधा-साधा एक प्रोडक्ट बेचना है इसमें तुम नैतिकता और

सच्चाई जैसे भारी भरकम सवाल मेरे सिर पर दे मार रही हो मैंने आईआईएम में 2 साल भाड़ नहीं झोंका वहां से मार्केटिंग सीख कर निकला हूं आई कैन सैल ऐ डैड रैट (मैं मरा चूहा भी बेच सकता हूं) यह सच्चाई नैतिकता सब में दर्जा चार तक मॉरल साइंस में पढ़ कर भूल चुका हूं।" **2** आज भी विज्ञापन के क्षेत्र में नैतिकता और सच्चाई का अभाव दिखाई देता है।

व्यवसायिकता से आजीविकावाद( करियरिज्म) पैदा होता है औरआजीविकावाद पारिवारिक संबंधों की भावात्मकता, आत्मीयता, प्रेम आदि को नष्टप्राय कर रहा है। भारतीय समाज में पूंजीवाद के कारण जो बदलाव आया इसका प्रभाव राष्ट्रीयता, परिवारिकता और मनुष्यता की मर्यादाओं पर पड़ा। इसका चित्रण लेखिका ने सहजता से इस उपन्यास में अंकित किया है। "युवा समीक्षक कृष्ण मोहन लिखते हैं - बीसवीं सदी के अंत में भारतीय समाज के सबसे गहरी सांस्कृतिक संकट का आख्यान है 'दौड़'।" **3**

दौड़ उपन्यास मध्यवर्गीय परिवार की सोच, दृष्टिकोण और उसकी मानसिकता को अभिव्यक्त करता है, जो बच्चों को हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा देते है। लेकिन उनके यही बच्चे जीवन में आगे बढ़कर तरक्की के उच्च शिखर पर चढ़कर परदेस चले जाते हैं और अपने माता-पिता की ओर मुड़कर भी नहीं देखते। सारा बुढ़ापा अकेलेपन में गुजारने के लिए विवश हो जाते हैं। कई बार तो बेटे माता-पिता के अंतिम संस्कार पर भी नहीं आते। उपन्यास में राकेश के पड़ोसी मिस्टर सोनी की मौत दिल का दौरा पड़ने से हो जाती है। विदेश में रहने वाला उनका बेटा सिद्धार्थ अपनी मजबूरी बताकर अपने पिता के अंतिम संस्कार पर नहीं पहुंचता। यह मजबूरी, विपदा मिसेस सोनी अपने पड़ोसियों से कहती है, तब वह सब इंतजार में जुट जाते हैं। मिन्हाज साहब का बेटा भूषण मुखाग्नि देता है।

आधुनिक युग में युवा वर्ग अपने करियर को बनाने की धुन में पारिवारिक संबंधों, नैतिकता , रीति-रिवाज को किस प्रकार तिलांजलि दे रहा है, इसका चित्रण उपन्यास में देखने को मिलता है। उपन्यास के पात्र रेखा और राकेश अपने बच्चे पवन और सघन के बेहतर भविष्य के लिए यथासंभव सारी सुख सुविधाएं समेंटते हैं। उन्हें महंगी और ऊंची शिक्षा देकर स्वप्निल जगत का मार्ग दिखाते हैं । उस स्वप्निल और चकाचौंध भरी दुनिया में पहुंचने के बाद वह इतने आगे निकल जाते हैं कि, उन्हें अपने मां - बाप के प्रति कर्तव्य निभाने का वक्त ही नहीं मिलता। जैसे बच्चे उन्हें भूल ही जाते हैं। टेक्निकल जीवन के आदी हो चुके इन बच्चों को अपने सपनों, अपने भविष्य, अपने वैभव के आगे संबंधों का महत्व बेमतलब लगने लगता है। राकेश और रेखा का सपना था कि, अपने बड़े बेटे पवन को एम.बी.ए. करवा कर उसे उज्जवल भविष्य देना। पवन मल्टीनेशनल कंपनी से जुड़ते ही एक ऐसी दुनिया में चला जाता है , जहां रेखा और राकेश के लिए कोई स्थान नहीं।

पवन आज के महत्वाकांक्षी युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। पवन के जीवन का लक्ष्य है करियर बनाना वह नैतिकता और नीति मूल्य को महत्व नहीं देता है। तरक्की पाने के लिए निरंतर नौकरियां बदलता है। उसके हिसाब से एक ही जगह पर नौकरी करते रहना अपना करियर बर्बाद करना है। आधुनिकता के रंग में वह इस प्रकार रंग गया है कि, पवन को उसके माता-पिता के विचार पुराने और गंवार लगते हैं। यहां तक की गंगा का पानी गंदा, बदबूदार लगता है। एक्वा का पानी पीना उसे अच्छा लगता है। "तब से अब तक गंगा जी में न जाने कितना मल मूत्र विसर्जित हो चुका है। मैं तो कहूंगा यह पानी आपके लिए भी घातक है एक्वागार्ड क्यों नहीं लगाते।" **4** पवन पाश्चात्य देशों जैसी सभ्यता का कायल हो गया है। इसी कारण स्टैला जैसी इसाई लड़की से शादी करने का फैसला वह अपने माता-पिता से पूछे बगैर लेता है। उनके विरोध पर भी अपने फैसले पर अड़ीग रहता है। स्टैला शादी के बाद नौकरी के कारण गुजरात में रहेगी और पवन कोलकाता में परंतु इसका पवन के मन में कोई मलाल नहीं है। उसको अपने करियर के आगे वैवाहिक जीवन भी गौण लगने लगता है। इतना ही नहीं खाना- पीना, आराम आदि किसी बात की उसकी फिक्र नहीं है।

वास्तव में यह वर्णन अकेले पवन का ही नहीं अपितु उन सारे युवकों का है, जिन्हें अपने करियर से बेहिसाब प्यार है। वे सब तरक्की के घोड़े पर संवार होकर आगे दौड़ना चाहते हैं । लेकिन इस दौड़ में वह जीवन का आनंद लेना ही भूल जाते हैं। कंपनियों में नौकरी करने वालों के जीवन में निजी कुछ बचता ही नहीं । कंपनी मोटी तनख्वाह जरूर देती है लेकिन इसके ऐवज में उनसे बेहिसाब काम भी करवाती है।

## निष्कर्ष

अंतः कहना होगा कि नई पीढ़ी का अपने करियर के लिए बड़ा संघर्ष करने की नियति बन चुकी है । निष्कर्षत: कह सकते हैं कि, भूमंडलीकरण के कारण समाज में फैले बाजारवाद, पूंजीवाद और उपभोक्तावाद के कारण युवा वर्ग अत्यंत संवेदनाहीन और मूल्यहीन होता जा रहा है। ममता कालिया ने 'दौड़' उपन्यास के माध्यम से भारत वर्ष के सभी लोगों को इस संकट से अवगत कराया है ।

## संदर्भ ग्रंथ -

1. **ममता कालिया**, **दौड़**, **पृ.**39 (**वाणी प्रकाशन** 110002, **पुनःआवृत्ति** 2009)

2. **वहीं**, **पृ.** 40

3. **वहीं**, **पृ.**07

4. **वहीं**, **पृ.**47

• **Copyright & License:**
© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.